मंगल शान्ति विधान

राजकुमार शास्त्री, द्रोणगिरि

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मंगल पाठ

('हरिगीतिका' छंद)

दोष अष्टादश रहित, सर्वज्ञ श्री अरहन्त हैं।
सर्वोदयी संदेश जिनका, वीर्य-सुख भी अनन्त हैं।।1।।
विधि अष्टविरहित ज्ञानतनयुत, तनरहित जो सिद्ध हैं।
गुण नंतमय प्रभु शोभते, पर अष्ट गुण ही प्रसिद्ध हैं।।2।।
दशधर्म द्वादश तप धरें, आचार पंच सु निरत हैं।
षडावश्यक गुप्ति त्रय जो, पालते आचार्य हैं।।3।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अंग एकादश चतुर्दश, पूर्व का स्वाध्याय है।
पठन पाठन रत रहें, वे उपाध्याय महान हैं।।4।।
विषय-आशा रहित हैं जो, सर्व संग विमुक्त हैं।
निज ज्ञानध्यान करें सदा, लौकिक क्रिया से मुक्त हैं।।5।।
स्याद्वादमय है कथन जिसमें, आत्मतत्त्व प्रकाशिनी।
मुक्ति पथ दिग्दर्शिका जो, भव्य भव-भय नाशनी।।6।।
त्रयलोक में कृत्रिम-अकृत्रिम, शोभते जिनभवन हैं।
हैं मोह के नाशक निलय, सादर उन्हें मम नमन है।।7।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जिनवरविरह को दूर करती, प्रतिमा जिनवरदेव की।
दृगमोह क्षय हो उस घड़ी, जिस घड़ी जिनवर सेव की।।8।।
वस्तु स्वभाव ही धर्म है, अरु रतनत्रय भी धर्म है।
दशलाक्षणी जो धर्म धारें, नष्ट होते कर्म हैं।।9।।
पंचपरमेष्ठी, जिनालय, जिनवचन, जिनबिम्ब हैं।
जिनधर्म सह सबको नमन, निज आत्म के प्रतिबिंब हैं।।10।।
जिनके गुणों का स्मरण, सब पाप मल को क्षय करें।
नवदेव हैं यह पूज्य सब, जो जगत में मंगल करें।।11।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

प्रतिमा प्रक्षाल पाठ

पुण्योदय है आज हमारा, जिनवर दर्शन पाये हैं।
जिन दर्शन कर निज दर्शन हों, यही भावना भाये हैं।।

अथ पौर्वाह्निकदेववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण
सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तवनवन्दनासमेतं

श्री पंचमहागुरुभक्तिपूर्वककायोत्सर्गं करोम्यहम्। (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

स्वर्ण रत्नमय सिंहासन पर, हे प्रभुवर तुम शोभित हो।
भाव पीठ स्थापित करता, तव गुण पर मैं मोहित हो।।

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

तन अरु वसन शुद्ध हैं प्रभुवर, मनशुद्धि की चाहत है।
परिणति सिंहासन पर आओ, हे जिनवर तव स्वागत है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवान्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

स्वर्ण कमल पर जिनवर शोभित, कलश विराजित हों चहुँ ओर।
जिनवर की प्यारी छवि लखकर, उदित हुआ है समकित भोर।।

ॐ ह्रीं अर्हम् कलशस्थापनं करोमि।

निर्मल जिनवर, निर्मल है जल, निर्मल मन करने आया।
पुण्योदय है आज हमारा, यह अवसर जिनवर पाया।।

ॐ ह्रीं श्री स्नपनपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हो परिपूर्ण शुद्ध ही जिनवर, प्रक्षालन का फिर क्या काम?
निर्मलता बस लक्ष्य एक है, तव प्रक्षालन तो बस नाम।।
प्रासुक जल लेकर कलशों में, भाव शुद्धि से करूँ न्हवन।
वीतराग निर्दोष रूप लख, प्रमुदित होता मेरा मन।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादिमहावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति-तीर्थंकरपरमदेवमाद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ..... नाम्निनगरे मासानामुत्तमे.....मासे.....पक्षे....दिने मुन्यार्यिकाश्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

('दोहा' छंद)

जिनवर के संस्पर्श से, जल भी हुआ पवित्र।
निज सम जो पर को करे, वह ही सच्चा मित्र।।
करूँ प्रक्षालन वस्त्र से, निज परिणति चमकाय।
बस अभेद पर दृष्टि हो, भेद नहीं दिखलाय।।

('वीर' छंद)

शुद्ध भाव अरु शुद्ध वस्त्र से, कीना है प्रतिमा प्रक्षाल।
निजस्वरूप का अनुभव करके, चलूँ मुक्तिपथ की अब चाल।।

ॐ ह्रीं शुद्धवस्त्रेण प्रक्षालनं करोमि।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मन की मिटी मलिनता प्रभुवर, तव गुणनिधि के चिन्तन से।
और अशुचि तन हुआ शुद्ध है, चरण कमल स्पर्शन से।।
नरतन सफल हुआ है मेरा, वीतराग पथ पाकर के।
हो पुरुषार्थ प्रभुवर ऐसा, रुकूँ मुक्ति पुर जाकर के।।
जब तक निज में न रम जाऊँ, दर्शन पूजन अर्चन हो।
सत्संगति स्वाध्याय सदा हो, निज हित हेतु समर्पण हो।।

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थिताय जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

विनय पाठ

('वीर' छंद)

चतुर्गति में भ्रमते-भ्रमते, मानव तन मैंने पाया।
महाभाग्य मेरा जागा जो, जिनवर दर्शन को आया।।1।।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, हित उपदेश तुम्हारा है।
तव दर्शन से हे जिन स्वामी, मोह शत्रु भी हारा है।।2।।
जिनपथ को जो जन न पाते, भव-भव में वे रुलते हैं।
पुण्योदय जो जिनपथ पायें, मुक्ति पथ वे चलते हैं।।3।।
चिंतामणिसम तुमको पाया, हो फिर क्यों जग की आशा।
आप दर्श से पौरुष जागा, क्षण में मोह तिमिर नाशा।।4।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हे जिनवर तव दर्शन से ही, निज अंतर रुचि जागी है।
वीतराग पथ प्रिय लगता है, विषयों की रुचि भागी है।।5।।
तुम सम प्रभुवर मिले पूर्णता, अरु पवित्रता आ जावे।
हे जिनवर तव पूजन से अब, और न कुछ यह मन चाहे।।6।।
वीतरागता न हो जब तक, वीतराग का राग रहे।
वीतरागता ही मंगलमय, राग-द्वेष तो आग लगे।।7।।
मुक्ति पंथ दाता हो प्रभुवर, तुम ही जग उद्धारक हो।
निज वैभव का ज्ञान कराते, भविजन के उपकारक हो।।8।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पंच परम पद मंगलमय हैं, मंगलमय हैं श्री महावीर।
जिनवच अरु जिनधर्म सुमंगल, नाशो प्रभुवर मेरी पीर।।9।।

पूजा पीठिका

('वीर' छंद)

अरहंत, सिद्ध, सूरि अरु पाठक, सर्व साधु को नमन करूँ।
पंच परम पद ये ही जग में, तिनि गुण चिन्तन-मनन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अरहंत, सिद्ध व साधु जग में, अरु सर्वज्ञ कथित है धर्म।
मंगल, उत्तम, शरण जगत में, ये ही जिय को दाता शर्म।।
मोह-राग-रुष पाप गलें, अरु सच्चा सुख इनसे मिलता।
लोकोत्तम अरु शरणभूत हैं, इन्हें नमें भवि उर खिलता।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पंच परम गुरु का गुण चिंतन, राग-द्वेष हरने वाला।
अर्चक-पूजक-चिंतक के उर, ज्ञानप्रभा भरने वाला।।
जिनवच में जो भवि रमते हैं, मोह वमन हो जाता है।
स्व-पर का हो भेदज्ञान, अरु निजानंद रस पाता है।।
जिनवर का पथ हमें मिला है, खुद जिनवर बन जाने को।
भक्तिभाव से करो अर्चना, लौट न भव में आने को।।
सुर-नर-पशु कृत विघ्न भागते, इसमें कुछ आश्चर्य नहीं।
पंच परम पद पूजन से जन, हो जाते हैं पूज्य यहीं।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

('चौपाई' छंद)

जल-चंदन-अक्षत-पहु लाया, चरु अरु दीप-धूप-फल भाया।
मंगल गान गीत शुभ गाया, प्रभु को हर्षित अर्घ्य चढ़ाया।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-पंचपरमेष्ठिभ्यो,
भगवज्जिनसहस्राष्ट नामभ्यः, जिनपंचकल्याणकेभ्यश्च
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

('पद्धरि' छंद)

अष्टादश दोष रहित जिनेश, त्रिभुवन के ज्ञायक हो महेश।
तुम मुक्तिमार्ग के नायक हो, भवि जीवन को सुखदायक हो।।
तुम हो अनन्त गुणवन्त देव, शत इन्द्र करें प्रभु तुम्हरी सेव।
तव आराधन से हे जिनवर, भविजन सब होते मुक्तिवर।।
मैं द्रव्य शुद्धि कर यथायोग्य, अब भाव शुद्धि चाहूँ मनोज्ञ।
इन्द्रादिक पद की चाह नहीं, विषयों की भी अभिलाष नहीं।।
तव पूजन से कुछ न चाहूँ, बस तुम सम ही बनना चाहूँ।
प्रभुदर्शन से मन सुमन खिला, मानो मरुस्थल में नीर मिला।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

('हरिगीत' छंद)

अरहन्त सिद्धाचार्य पाठक, साधु वंदन योग्य हैं।
ऋषभादि तीर्थंकर हमारे, पथ प्रदर्शक पूज्य हैं।।
सीमंधरादि जिनवरा, शोभित महा विदेह में।
हैं जिनवचन मंगलमयी, आतम दिखाते हैं हमें।।
ऋद्धिधारक मुनिवरों के, चरण में मम नमन हो।
चलूँ उनके ही सुपथ पर, मोह का अब वमन हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हैं तीर्थक्षेत्र सुखद सभी, हमको भवोदधि तारने।
जिन चैत्य-चैत्यालय जजूँ, मैं मात्र मुक्ति कारणे।।
वीतरागी धर्म है बस, राग हरने के लिए।
जिन अर्चना है पूज्य-पूजक, भेद भरने के लिए।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मंगल शान्ति विधान

मांगलिक

('मानव' छंद)

इस भव अटवी में भ्रमते, दुख पाए हैं चहुँगति में।
पाई ना इक क्षण साता, सुर-नर-नारक-पशु तन में।।
अब सोया भाग्य जगा है, जो जिनवर दर्श मिला है।
मानों मरुथल में प्रभुवर, इक सुरभित कमल खिला है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

तन में अपनापन करके, मैं निज स्वरूप ना जाना।
अब तव दर्शन से स्वामी, पाऊँ सुख जो अनजाना।।
नवदेव मिले मंगलमय, आतम शांति पाने को।
विषयों की तज अभिलाषा, चाहूँ निज में रमने को।।
मैं मिथ्या मति को त्यागूँ, नव देवों से चित पागूँ।
मंगल सुख शांति पाऊँ, अब निज स्वरूप में जागूँ।।
मैं सुर पदवी ना चाहूँ, ना विषयों की अभिलाषा।
परिजन-पुरजन अरु धन पद, की भी नहीं मन में आशा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अरिहंत-सिद्ध अरु सूरि, पाठक-मुनिवर-जिन मंदिर।
जिन प्रतिमा-जिन वच पूजूँ, जिनधर्म बसे मम अंतर।।

('दोहा' छंद)

नव देवों को पूजकर, निज स्वरूप पहचान।
मंगल-शांति विधान कर, कर निज का कल्याण।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

परम पूज्य नवदेव पूजन

स्थापना

('वीर' छंद)

वीतराग-सर्वज्ञ-हितंकर, अर्हत प्रभु को है वंदन।
अष्ट कर्म विरहित सिद्धों का, करता हूँ मैं अभिनंदन।।
गुण छत्तीस सहित आचारज, के चरणों में करूँ नमन।
उपाध्याय जिनध्वनि के ज्ञाता, निर्मल जिनका मन-वच-तन।।
निज स्वरूप को साधें मुनिवर, समता रस नित बरसाते।
जिन मंदिर-जिन प्रतिमा को लख, सुर-नर-मुनि गण हरषाते।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शुद्ध स्वरूप कहे जिनवाणी, वीतरागता की पोषक।
निज स्वभाव महिमा बतलाती, मिथ्यामल की है शोषक।।
वस्तु स्वभाव 'धर्म' कहलाता, धर्म 'अहिंसा' अरु 'वीतराग'।
निज अनुभूति परम धर्म है, निज को निज में ही अब पाग।।
परम पूज्य नव देव हमारे, मंगल-शांति प्रदाता हैं।
वे नवदेव बसें अंतर में, चतुर्गति दुख त्राता हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-जिनमंदिर-जिन प्रतिमा-जिनवाणी-जिनधर्म नवदेवाः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्, अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

कहीं अज्ञ यह कामिनी रति को, भव-वन में भागा फिरता।
कहीं अर्थ संरक्षण हेतु, दुखमय आकुलता करता।।
कोई भविक विज्ञ पंडित है, जो जिन पथ पर है चलता।
निज आतम में रमण करे, अरु मुक्ति रमा को है वरता।।
नव देवों को जल अर्पित कर, जन्म-मरण का नाश करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक, मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

समयसार इक सार तत्त्व अरु, मोह वृक्ष को प्रबल कुठार।
काम-क्रोध नाशक है जग में, शुद्ध बोध का है अवतार।।
समयसार का आश्रय लेकर, समयसार मय हो जाऊँ।
सहज ज्ञान-आनंद प्राप्त कर, लौट न फिर भव में आऊँ।।
नव देवों को अर्पित चंदन, भवाताप का नाश करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो संसारतापविनाशनाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गुण-पर्यय युत सभी जीव हैं, स्व चतुष्ट से सभी समान।
त्रिविध कर्म से रहित सदा हैं, सिद्धों सम ही वैभव जान।।
जन्म-जरा अरु मरण रहित हैं, अष्ट गुणों से हैं संयुक्त।
सुधी-कुधी किस नय से जानूँ, त्यों संसारी ज्यों है मुक्त।।
नव देवों को अक्षत अर्पित, अक्षय पद को प्राप्त करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जन्म-मरण के जनक कहे हैं, दोषों सहित सकल आचार।
पर-लक्ष्यी जो क्रियाकांड है, त्याज्य कहा यह बाह्याचार।।
सहज ज्ञान-दर्शन अरु सुखमय, निज आतम में करो विहार।
ज्ञाता-दृष्टा साक्षी रहकर, संयोगज सब तजो विकार।।
नव देवों को पुष्प समर्पित, कामभाव का नाश करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक, मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पाप भाव तो दुखमय ही हैं, पुण्य 'कल्पना' में रमणीय।
भव के मूल शुभाशुभ ही हैं, अतः विज्ञ जानों त्यजनीय।।
आत्मज्ञान अरु आत्मध्यान ही, है निश्चय से इक कर्तव्य।
परमानंद समयपूरित निज, परम सत्य है आश्रय योग्य।।
नव देवों को चरु चढ़ाऊँ, क्षुधा रोग का नाश करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक, मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जीव अकेला चतुर्गति में, जन्म-मरण के दुख भोगे।
यश-अपयश अरु लाभ-हानि भी, जीव अकेला ही भोगे।।
एकाकी ही कर्मोदय से, चतुर्गति में है भ्रमता।
सत् गुरु से उपदेश प्राप्त कर, निजानंद में है रमता।।
नव देवों को दीप समर्पित, मोह महातम नाश करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक, मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

एक-शुद्ध-चैतन्य आत्मा, ज्ञान-दर्श से हूँ परिपूर्ण।
मैं इक शाश्वत शुद्धातम हूँ, त्रिविध कर्म को कर दूँ चूर्ण।।
मैं अनंत गुण-शक्ति युक्त हूँ, बाह्य भाव से लाभ नहीं।
निज वैभव को जब से देखा, जड़ वैभव की चाह नहीं।।
नव देवों को धूप चढ़ाऊँ, अष्ट कर्म विध्वंस करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक, मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पुण्य पाप में अंतर करके, अज्ञ पुण्य में रमता है।
पुण्य-पाप दोनों भव हेतु, विज्ञ समझ कर तजता है।।
नित्यानंदी सहज ज्ञानमय, जीव तत्त्व जो प्राप्त करे।
करे विहार सहज चेतन में, तीन लोक का पूज्य बने।।
नव देवों को फल अर्पित कर, मोक्ष महाफल प्राप्त करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक, मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

नाना भेद सहित जीवों से, भरा हुआ है यह संसार।
नाना गति हैं नाना जाति, बुद्धि-लब्धि भी विविध प्रकार।।
समझाने से कोई न समझे, सब समझें निज मति अनुसार।
अतः विवाद करो मत भाई, नहीं किसी की जीत ना हार।।
नव देवों को अर्घ्य समर्पित, पद अनर्घ्य को प्राप्त करूँ।
सब सुखदायक, भवभय नाशक, मंगल-शांति विधान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

भावना

('वीर' छंद)

भव समुद्र में भ्रमते-भ्रमते, मानव तन मैंने पाया।
महाभाग्य मेरा जागा जो, जिनवर दर्शन को आया।।
परद्रव्यों की प्रीति से ही, भव-भव में दुख पाए हैं।
त्रस-थावर गतियों में भ्रमते, आज यहाँ तक आए हैं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

परद्रव्यों का ज्ञायक माना, निज आतम तो रहा अगम्य।
जिनवचनों से अब यह जाना, शुद्धातम त्रिभुवन में रम्य।।
ममता जब निज की आ जाए, मिल जाए तब निजपद राज।
आतम हित में रहूँ समर्पित, अन्य रहे ना कोई काज।।
अगम आत्मा में हो निष्ठा, सुख समुद्र में होए प्रवेश।
कर्म पाश से रहित विपाशा, आकुलता का जहाँ न लेश।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अरहन्त परमेष्ठी के लिए अर्घ्य

('दोहा' छंद)

गृहस्थ अवस्था त्याग कर, धरा दिगंबर वेश।
निज स्वभाव साधन लिया, मिटे अनादि क्लेश।।
स्व चतुष्टय में आय कर, अनंत चतुष्टय पाय।
निजानंद में लीन रह, त्रिभुवन पति कहलाय।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

('चौपाई' छंद)

दोष अठारह सब ही नाशे, सप्त तत्त्व षट् द्रव्य प्रकाशे।।
ऋषभ-अजित-संभव जिन स्वामी, अभिनंदन-सुमति प्रभु नामी।।
पद्म-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ जिनवर, पुष्पदंत-शीतल-श्रेयस्कर।।
वासुपूज्य अरु विमल-अनंत, धर्म-शांति-कुंथु अर भगवंत।।
मल्लिनाथ-मुनिसुव्रत स्वामी, नमि-नेमि प्रभु हैं जगनामी।।
पार्श्वनाथ सब जीव हितंकर, महावीर प्रभु हैं क्षेमंकर।।
ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर, परम शांतिमय हैं परमेश्वर।।
भरतैरावत चौबिस होते, ज्ञान प्रभा मिथ्यातम खोते।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

बीस जिनेश्वर हैं विदेह में, देह रहित पर रहें देह में।।
एक शतक सत्तर तीर्थंकर, हो सकते इक संग अभयंकर।।
उन सम ही निज वैभव मेरा, निज अनुभव से होय सबेरा।।
तीन काल के सब अरहंत, अनुपम अद्भुत महिमा वंत।।
महा पुण्य अवसर यह आया, अर्हत छवि लख मन हर्षाया।।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य चढ़ाऊँ, मैं भी निर-आकुल सुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं अनंतभवार्णवभयनिवारकानन्तगुणस्तुताय
अर्हते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सिद्ध परमेष्ठी के लिए अर्घ्य

('वीर' छंद)

निज पद के आराधन से ही, अशरीरी पद पाया है।
जो अनादि से व्यक्त नहीं था, निज स्वरूप प्रगटाया है।।
निर्मलता सब गुण में आई, ध्रुव-अनुपम गति पाई है।
गमनागमन मिटा चहुँगति का, अतः अचलता आई है।।
निकट भव्य तव गुण को गाकर, निज गुण को हैं पा जाते।
सिद्धों के पथ पर चलकर के, स्वयं सिद्ध वे हो जाते।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ज्यों दिनकर के सहज योग से, पंकज श्री है खिल जाती।
त्यों तव गुणनिधि के चिंतन से, निजनिधि मुझको मिल जाती।।
आप रहें आदर्श सदा ही, सविनय शीश झुकाता हूँ।
सिद्धों के पावन चरणों में, सादर अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशक-निजात्मतत्त्वविभासक-सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

आचार्य परमेष्ठी के लिए अर्घ्य

('दोहा' छंद)

छत्तिस गुण व्यवहार हैं, निज अनुभव परमार्थ।
परहित तो उपलक्ष्य है, निजहित है सत्यार्थ।।
ढाई द्वीप में जो हुए, हैं अरु आगे होंय।
सब सूरिश्वर को नमन, भविजन के मल खोंय।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

('हरिगीतिका' छंद)

तप तपें द्वादश, धरें दश वृष, निरत पंचाचार हैं।
षडावश्यक, गुप्ति त्रय धर, करें नित उपकार हैं।।
निज आत्मा का ध्यान धरते, संघ संचालन करें।
दीक्षित करें भुवि भव्यजन, कर्तृत्व बुधी निज परि हरें।।
बहु ग्रंथ रचना कर सहज, हम पर किया उपकार है।
अर्घ्य अर्पित कर चरण में, वंदना शतवार है।।

ॐ ह्रीं अनवद्यविद्याविद्योतनाय आचार्यपरमेष्ठिने
अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

उपाध्याय परमेष्ठी के लिए अर्घ्य

('सवैया' छंद)

ग्यारह अंग लखें इक क्षण में, चौदह पूर्व के हैं जो ज्ञाता।
परद्रव्यों का ज्ञान भले हो, पर निज आतम से ही नाता।।
पढ़ें पढ़ावें पाठक सब ही, बस शुद्धातम ही मन भाता।
पथ उनके चल शिव सुख पाऊँ, सादर सविनय अर्घ्य चढ़ाता।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगपरिपूरणश्रुतपाठनोद्यत-बुद्धिविभवोपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

साधु परमेष्ठी के लिए अर्घ्य

('दोहा' छंद)

चहुँगति के दुख से डरे, शिव-सुख से अनुराग।
विषय-कषायनि त्याग कर, छोड़ा द्वेष अरु राग।।
चौबिस परिग्रह त्याग कर, निज में किया निवास।
निज वैभव पाया मुनि, फिर क्यों पर की आश।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

('रेखता' छंद)

धरा जब नग्न दिगम्बर वेश, महाव्रत-समिति हिय में धार।
पंच इंद्रिय पर पाई जय, धरें षट् आवश्यक सुखकार।।
सात गुण शेष धरें मुनिराज, करें षट् कायनि पर उपकार।
प्रचुर स्व संवेदन है मुख्य, यही है निश्चय अरु व्यवहार।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

रहें नित आतम में लवलीन, नहीं जिनको पर की परवाह।
न परिषह-उपसर्गों का भय, नहीं किंचित् पद-यश की चाह।।
रहें सप्तम-षष्ठम गुणथान, मिला निज वैभव का है राज।
अर्घ्य से पूजन करता आज, बनूँ मैं भी ऐसा मुनिराज।।

ॐ ह्रीं घोरतपोऽभिसंस्कृतध्यानस्वाध्यायनिरत-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अकृत्रिम-कृत्रिम जिनमंदिरों के लिए अर्घ्य

(तर्ज - तिहारे ध्यान की मूरत)

है शाश्वत लोक की रचना, कोई कर्ता नहीं धर्ता।
रहें षट् द्रव्य इस जग में, नहीं कोई जिन्हें हर्ता।।
लोक त्रय में विभाजित जो, ऊर्ध्व-मध्य-अधो लोक।
हैं जिन ग्रह शोभते जहँ पर, हरें भव्यों का जो शोक।।
असंख्य जिन भवन शाश्वत, जो निज शाश्वत सुख दर्शाते।
है सिद्धों सम ही मम वैभव, ये मंदिर ही हैं बतलाते।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हैं कृत्रिम जिन भवन जग में, भविकजन ने किए निर्मित।
जिनालय तो हैं शिक्षालय, सभी को अर्घ्य है अर्पित।।

ॐ ह्रीं अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्र-
चतुःशतएकाशीति-संख्याकृत्रिमजिनालयेभ्यः
कृत्रिमजिनालयेभ्यश्च अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अकृत्रिम-कृत्रिम जिन प्रतिमाओं के लिए अर्घ्य

(तर्ज - मेरे मन मंदिर में आन)

लखो जिन मंदिर में भवि आन, विराजे वीतराग भगवान।
विराजे वीतराग भगवान, निहारें निज निधि अतुल महान। टेक।।
तीन लोक है अद्भुत सुंदर, वीतराग प्रभु की छवि मनहर।
प्रभु दर्शन से हो कल्याण, विराजे वीतराग भगवान।।
कृत्रिम और अकृत्रिम प्रतिमा, जिन शासन की इनसे गरिमा।
करातीं निज वैभव का ज्ञान, विराजे वीतराग भगवान।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अंतर्मुख मुद्रा से शोभित, मोह भाव हो जाए तिरोहित।
करायें स्व-पर भेद विज्ञान, विराजे वीतराग भगवान।।
जिनदर्शन कर भविजन हर्षित, जिनबिंबों को अर्घ्य समर्पित।
लखो सब प्रतिमा में प्रतिमान, विराजे वीतराग भगवान।।

ॐ ह्रीं नवशतपंचविंशतिकोटित्रिपंचाशल्लक्षसप्तविंशतिसहस्र-नवशताष्टचत्त्वारिंशत्प्रमिताकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यः कृत्रिमजिन-बिम्बेभ्यश्च अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जिनवाणी के लिए अर्घ्य

('दोहा' छंद)

राग-द्वेष विरहित प्रभो, पायो केवलज्ञान।
देकर हित उपदेश वर, किया जगत कल्याण।।

('वीर' छंद)

अनेकांतमय वस्तुव्यवस्था, जिनवाणी बतलाती है।
नय-प्रमाण से सब द्रव्यों का, सत्य स्वरूप दिखाती है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जिनवाणी अभ्यास बिना मैं, वस्तुस्वरूप ना पहचाना।
निज-पर, भक्ष्य-अभक्ष्य, हिताहित, को भी अबतक ना जाना।।
अज्ञ दशा में रहकर मैंने, चतुर्गति में दुख पाया।
विषयों का मैं बना भिखारी, निज वैभव को बिसराया।।
पुण्य उदय मेरा आया है, नर तन-जिन श्रुत भी पाया।
हुई विशुद्धि और क्षयोपशम, जिनवच सुनने को आया।।
मल को गाले-सुख को लावे, मंगलमय प्रभु की वाणी।
आकुलता को दूर भगावे, शांति प्रदाता जिनवाणी।।
कलिकाल में जिन वच ना हो, तो घनघोर अंधेरा है।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पढ़ो-सुनो-समझो जिनवाणी, होगा तभी सवेरा है।।
स्याद्वादमय जिनवचनामृत, पियो-पिलाओ हे भविजन।
जिन वचनामृत पान किए बिन, नहीं मिटेगा भव क्रन्दन।।
स्व-परप्रकाशक, भव-भयनाशक, जिनवाणी का करूँ मनन।
जिनवाणी को अर्घ्य चढ़ाकर, सादर सविनय करूँ नमन।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादांकितजिनागमायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जिनधर्म के लिए अर्घ्य

('चौपाई' छंद)

चहुँगति के जो दु:ख नशावे, जन्म-मरण का भय विनशावे।
उत्तम-अविनाशी सुख लावे, शिव सुख को जो है प्रकटावे।।
जो सर्वज्ञ प्ररूपित होता, भविजन के जो कल्मष धोता।
वह ही तो जिनधर्म कहावे, कर्मनाश शिवपुर पहुँचावे।।
सब अर्हंतों ने समझाया, अनेकांतमय धर्म बताया।
वस्तु स्वभाव भी धर्म कहा है, रत्नत्रय भी धर्म महा है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सोलह कारण मंगलकारी, दशलक्षण भी हैं सुखकारी।
वीतरागता भव दुखहारी, धर्म एक यह शिव सुखकारी।।
है अभेद इक धर्म बताया, जिसे भेद करके समझाया।
नय निश्चय-व्यवहार बताया, भेदाभेद स्वरूप लखाया।।
प्रमुदित होओ हे भवि प्राणी, धर्म मिला है शिव सुखदानी।
है जिन धर्म महा मंगलमय, अर्घ्य चढ़ाकर होऊँ निर्भय।।

ॐ ह्रीं दशलक्षणोत्तमक्षमादि-त्रिलक्षणसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररूप-मुनि-गृहस्थाचारभेदेन द्विविध-दयारूपत्वेनैकरूप-जिनधर्मायऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

विनयांजलि

(तर्ज- जिया कब तक उलझेगा संकल्प विकल्पों में।)

चहुँगति की गलियों में, प्रभु कब से भटक रहा।
जग की रंग रलियों में, निज निधि को भूल रहा।।
मैं काल अनंत अरे, पशु गति में रह आया।
वध-बंधन-छेदन के, बहु दुख मैं सह आया।।
मैं भार वहन करते, अकथित दुःख पाये हैं।
सबलों ने मारा मुझे, बहु कष्ट उठाये हैं।।
छल कर करके मैंने, बस अब तक कष्ट सहा।
चहुँगति की गलियों में, प्रभु कब से भटक रहा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

आकुलता में मरकर, मैं नरक गति जन्मा।
भू के स्पर्शन से, मैं प्रभु बहुविध तड़फा।।
जहाँ भूख-प्यास भारी, शीतोष्ण भयंकर है।
देखूँ मैं चहुं दिशि में, नहीं कोई हितंकर है।।
हर क्षण बस चिल्लाऊँ, दुख नाहीं जाये सहा।
चहुँगति की गलियों में, प्रभु कब से भटक रहा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जब नरतन को धारा, गर्भादिक दुख सहे।
जन्में जब इस भू पर, तब अगणित कष्ट लहे।।
धन-पद-यश की चाहत, बस आकुलता मय है।
कर्मोदय में भूला, निज निधि जो सुखमय है।।
दुख पाये जीवन भर, मुझसे न जाये कहा।
चहुँगति की गलियों में, प्रभु कब से भटक रहा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सुर गति में भोगों की, मदिरा पी मस्त रहा।
विषयों की तृष्णा में, हे प्रभु मैं त्रस्त रहा।।
निज-पर के ज्ञान बिना, सुर वैभव दुखमय है।
वह सुख न कभी पाता, जो तन में तन्मय है।।
मैं मोह सहित रहकर, सुर गति में दुख लहा।
चहुँगति की गलियों में, प्रभु कब से भटक रहा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अब तक जीवन बीता, मिथ्यात्व अंधेरे में।
तन-धन को निज माना, संसार के फेरे में।।
जिनवर-जिनश्रुत-जिनगुरु, से अब तक दूर रहा।
मिथ्या पथ पर चलकर ही, अब तक कष्ट सहा।।
नव देव मिले अब तो, दु:खों का अंत अहा।
चहुँगति की गलियों में, प्रभु कब से भटक रहा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मंगलमय धर्म मिला, मंगल-शांति पाने।
जिनवर के पंथ चलूँ, खुद जिनवर बन जाने।।
त्रिभुवन में इक सुन्दर, परिपूर्ण रूप मेरा।
जिनसम निज रूप लखो, मिटे गतियों का फेरा।।
मैं परम पारिणामिक, स्वयमेव ही देव अहा।
मैं तो अनंत सुखमय, जिनदेव ने सदा कहा।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

महार्घ्य

('रोला' छंद)

मिथ्या दर्शन ज्ञान-चरण वश, बहु दुख पाया।
हित उपदेशक मिला न कोई, मैं भरमाया।।
स्व-पर, पूज्यापूज्य, हिताहित का विवेक ना।
सप्त तत्त्व षट् द्रव्यादिक का ज्ञान हुआ ना।।
राग-द्वेष मय देव-देवियाँ पूजी मैंने।
राशि-ग्रह-नक्षत्र-दिशायें पूजी मैंने।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पर्वत–नदी तराजू–तिजोरी रहा पूजता।
चमत्कार को नमस्कार कर रहा घूमता।।
महा भाग्य से नव देवों का संग मिला जब
सुख–दुख कर्ता मान उन्हीं की शरण रहा तब।
वीतराग नव देव सभी हैं यह न माना।
सुख पथ दर्शक के समक्ष दुख पाये नाना।।
नव देवों से विषय भोग की मन्नत मांगी।
वीतराग निर्दोष प्रभु को माना रागी।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

महाभाग्य शुभ अवसर में जिनवच है पाया।
ज्ञान सूर्य का उदय होय यह अवसर आया।।
हैं नव देव पूज्य जग में शिवपथ बतलाते।
उनके पथ पर चलकर मंगल शांति पाते।।
मंगल-शांति विधान करूँ मैं आनंदकारी।
महा अर्घ्य अर्पित कर पद पाऊँ अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-जिनमंदिर-जिन प्रतिमा-जिनवाणी-जिनधर्म-नवदेवेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्त्ये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

('वीर' छंद)

पंच परम पद, जिन मंदिर, जिनबिम्ब धर्म अरु जिनवाणी।
मंगल-शांति प्रदायक जग में, नमन करें सब भवि प्राणी।।
वीतराग अरहन्त प्रभु ने, शुद्धातम बतलाया है।
नग्न दिगम्बर सन्तों ने भी, अनुभव कर दिखलाया है।।
वीतराग जिनवर की वाणी, वस्तु स्वरूप बताती है।
तीन लोक में सबसे सुंदर, समयसार दिखलाती है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जिनवर दर्शन करके जाना, मेरा भी है जिन सम रूप।
शुद्ध बुद्ध कारण परमातम, मैं तो हूँ चैतन्य स्वरूप।।
रंग-राग सब ही दिखते हैं, पर मैं इनसे भिन्न अरे।
देही-रागी, मान-मानकर, अब तक तो हम जिये मरे।।
अरस-अरूपी-अस्पर्शी हूँ, गंध-शब्द से रहित सदा।
बाल-युवा अरु तरुण नहीं हूँ, नर-नारी भी नहीं कदा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मैं निर्दण्ड सदा निर्मल हूँ, निर्मम अरु निष्कर्म स्वरूप।
कर्ता-धर्ता नहीं किसी का, ज्ञाता मात्र सदा मम रूप।।
ज्ञान रूप दर्पण में मेरे, जड़-चैतन्य झलकते हैं।
मैं मुझमें, पर पर में रहता, वे न मुझमें महकते हैं।।
लोकोत्तम अरु शरणभूत है, नित्य त्रिकाली ध्रुव आतम।
मंगलकारी शांति विधायक, सहज शुद्ध निज परमातम।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

‘मंगल-शांति’ विधान किया है, मंगल-शांति पाने को।
जिनवर को लख मन मचले है, शाश्वत सुख के पाने को।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु-जिनमंदिर-जिन प्रतिमा-
जिनवाणी-जिनधर्म नवदेवेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पुण्योदय से नरतन पाया, महाभाग्य जिनधर्म मिला।
जिनवर-जिनश्रुत-जिनगुरु पाकर, मुरझाया मन सुमन खिला।।
मंगल-शांति विधान किया अब, निर्भय होकर बिचरूँगा।
करूँ समर्पण निज का निज में, लौट न भव में आऊंगा।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री देव-शास्त्र-गुरु का अर्घ्य

चिदानंद चिन्मय के सन्मुख, जड़ वैभव का मोल नहीं।
इन्द्र विभूति-चक्री वैभव, का भी कोई तोल नहीं।।
लौकिक पद की चाह न किंचित्, पद चाहूँ मैं एक अनर्घ्य।
देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, करूँ समर्पित मैं यह अर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

महावीर भगवान का अर्घ्य

मतिज्ञान से रहित हो सन्मति, शस्त्र रहित पर हो महावीर।
अगुरुलघु पर वर्धमान हो, निर्भय करते हो अतिवीर।।
वीर नाम है विरद आपका, त्रिशलानंदन कहलाते।
मुक्तिवधु के प्रियवर को लख, सुन-नर-मुनि नत हो जाते।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

चौबीस तीर्थंकर को अर्घ्य

('अवतार' छंद)

मैं भूल स्वयं निज रूप, भव-भव दुख पाया।
हूँ स्वयं सिद्ध सुख भूप, प्रभु ने समझाया।।
ऋषभादि वीर जिनेश, चौबिस प्रभु ध्याऊँ।
मैं करूँ कर्म अवसान, अष्टम भू पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री सिद्ध भगवंतों के लिए अर्घ्य

क्षायिक दर्शन-ज्ञान-अगुरुलघु, सूक्ष्मत्व अरु अव्याबाध।
समकित-वीरज अवगाहन से, और रही न कोई साध।।
प्रकट अष्ट गुण हुए प्रभु को, यह कहना है बस व्यवहार।
गुण अनंतमय प्रभु शोभते, जहाँ न कोई है उपचार।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अनंत गुणमयी निजानुभूति, अनंत काल तक भोगेंगे।
बनें प्रभु के हम अनुगामी, अब क्यों भव में रोयेंगे।।
कर सिद्धत्व साध्य ही अपना, सिद्धों को सादर ध्याऊँ।
गुण अनंतमय अर्घ्य समर्पित, लौट न फिर भव में आऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यंनि.स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

महार्घ्य

('वीर' छंद)

पंच परम पद पूज रहा हूँ, अरु पूजूँ जिनवाणी को।
जिनमंदिर, जिनबिंब जजूँ मैं, सुख शान्ति के पाने को।।
वीतरागमय धर्म को पूजूँ, वीतराग बन जाने को।
तीर्थक्षेत्र सभी मैं वन्दूँ, भवसागर तर जाने को।।
पंचमेरु नंदीश्वर वंदूँ, वंदूँ मैं रत्नत्रय धर्म।
दशलक्षण मैं सादर वन्दूँ, जिनसे कटते सारे कर्म।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

तीन लोक के पूज्य पदों को, सादर वन्दन करता हूँ।
पद अनर्घ्य मिल जाये स्वामी, अर्घ्य समर्पित करता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो, द्वादशांगजिनवाणीभ्यो
उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय, दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो,
सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः त्रिलोकसम्बन्धीकृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो,
पंचमेरौ अशीतिचैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वरद्वीपस्थद्विपंचाशज्जिनालयेभ्यो, श्री सम्मेदशिखर,
गिरनारगिरि, कैलाशगिरि, चम्पापुर, पावापुर-आदिसिद्ध-क्षेत्रेभ्यो, अतिशयक्षेत्रेभ्यो,
विदेहक्षेत्रस्थितसीमंधरादिविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो,
ऋषभादिचतुर्विंशति-तीर्थकरेभ्यो,
भगवज्जिनसहस्राष्ट-नामभ्यश्च अनर्घ्यपदप्राप्तये महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

('हरिगीत' छंद)

तुम शान्ति सागर हो प्रभु, मैं शान्ति पाना चाहता।
हों जीव सारे शान्तिमय ही, और कुछ न चाहता।।
तव दर्श-पूजन से प्रभो, मुझको समझ यह आ गया।
मैं स्वयं सुखरूप हूँ, मम रूप मुझको भा गया।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अब मोहतम का नाश होवे, ज्ञान का सुप्रभात हो।
सब ईति-भीति नष्ट होकर, धर्म का ही प्रसार हो।।
जबतक न तुम सम मम दशा हो, तव शरण मुझको मिले।
सज्जनों का साथ हो अरु, जिनवचन से उर खिले।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

क्षमापना

('दोहा' छंद)

गुण अनंतमय आप हैं, मैं हूँ अति अल्पज्ञ।
तव गुण कथन न कर सकें, सुर-नर-मुनि बहु विज्ञ।।
पूजन-अर्चन कथन में, द्रव्य-भाव त्रुटि होय।
क्षमायाचना मैं करूँ, मानादिक को खोय।।
मंगलमय हैं वीर प्रभु, गौतम अरु कुन्दकुन्द।
मंगल जिनशासन अहो, मंगल हैं मुनिवृन्द।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।
सर्वमंगल-मांगल्यं सर्वकल्याणकारकम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम्।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु